आर्य पुरोहित सभा का चिन्तन शिविर

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली राज्य ने 23-24 दिसम्बर 2005 को प्यारेलाल भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली में चिन्तन शिविर और बुद्धिजीवी सम्मेलन का भव्य आयोजन किया। इसका आयोजन पुरोहित सभा के प्रधान श्री अमरदेव शास्त्री और संचालन श्री प्रेमपाल शास्त्री के कुशल नेतृत्व में हुआ। वस्तुतः दिल्ली में पुरोहितों का ऐसा आयोजन करना एक जोखिम भरा काम था। इसका सीधा अर्थ था दिल्ली की कथित आर्य प्रतिनिधि सभा की नाराजगी मोल लेना जिसके अधिकारियों को इस कार्यक्रम में आमंत्रित नहीं किया गया था अथवा उन्होंने खुद ही इसका बहिष्कार करने का फैसला ले रखा था क्योंकि इसमें स्वामी अग्निवेश जी को प्रधान सार्वदेशिक सभा के नाते बुला रखा था और स्वामी इन्द्रवेश जी भी आमंत्रित थे। आयोजकों में श्री प्रेमपाल शास्त्री, अनिल आर्य, बलजीत सिंह आदित्य का नाम भी उनके लिए कम परेशानी का कारण नहीं था। इन विक्षुब्धमनः अधिकारियों की यह पुरजोर कोशिश रही कि यह आयोजन फ्लॉप हो जाये। अपने इस प्रयास में वे किंचित सफल भी हुए लेकिन कार्यक्रम सफल रहा।

पुरोहितों के दो दिन चले इस चिन्तन शिविर को सर्वश्री स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, प्रो. कैलाशनाथ सिंह, जगवीर सिंह एडवोकेट, डॉ. वेदप्रताप वैदिक, डॉ. वागीश कुमार, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. छविकृष्ण शास्त्री, डॉ. शिवकुमार शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, डॉ. सत्यपाल सिंह, चन्द्रशेखर शास्त्री, भूदेव साहित्याचार्य, नरेन्द्र विद्यालंकार, शिवराम विद्यावाचस्पति, आचार्य रामचन्द्र आदि ने सम्बोधित करते हुए पुरोहितों से जुड़ी समस्याओं को गम्भीरता से यहां उठाया। कर्मकाण्ड अर्थात् संस्कारों में उभर रही विविधता को भी यहां उठाया गया। श्री अमरदेव शास्त्री और श्री प्रेमपाल शास्त्री ने अपने संचालन दायित्व को निभाते हुए अपने विचार फुटकर रूप में श्रोताओं के समक्ष रखे। पहले दिन के सत्र में आर्य पुरोहितों की समस्या व निदान और अध्यात्म जागरण ये दो विचारणीय विषय थे। दूसरे दिन के सत्र के विषय थे- कर्मकाण्ड में एकरूपता और आर्य समाज की वर्तमान दशा व नई दिशा। वक्ता इन चारों विषयों पर खुल कर बोले व आर्य समाज के पुनरुदय एवं सर्वोत्थान के निमित्त अनेक सुझाव, परामर्श व योजनाएँ प्रस्तुत कीं।

इस चिन्तन शिविर का भास्वर यही रहा कि सार्वदेशिक सभा सवा सौ साल के इतिहास में पुरोहितों की सुध पहली बार ले रही है। सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी बन्धुआ मुक्ति मोर्चे के माध्यम से बन्धुआ मजदूरों को मुक्ति दिला रहे हैं लेकिन आर्य समाज के पुरोहित जो प्रधानों व मंत्रियों के बन्धुआ मजदूर बन चुके हैं उन्हें भी वे मुक्ति दिलायें। यह मुक्ति अभियान शाब्दिक नहीं सार्थक होना चाहिए। आर्य समाज में सर्वत्र जो व्यवस्था व्याप्त है उसने समाज के सिरमौर पुरोहित के औचित्य, अस्तित्व और अस्मिता तीनों को नकार रखा है और उसे मात्र समाज का सेवक, नौकर या कर्मचारी मान लिया है। वस्तुतः शरीर रूपी समाज के सिर (पुरोहित) पर शरीर के दूसरे अंग हाथ (संस्था के अधिकारी), पेट (दानी, यजमान) और पैर (संस्था के सेवक व कर्मचारी) भारी पड़ रहे हैं जिससे यह सिर हमेशा झुका रहता है। जहां ऐसी स्थिति होगी वहां समाज उत्थान नहीं कर सकता। आर्य समाज को यदि ऊँचा उठाना है तो उसे अपने इस सिर को ऊँचा उठाना होगा अन्यथा उसकी कोई भी योजना, कोई भी आन्दोलन, कोई भी रणनीति और कोई भी मिशन सफल नहीं होगा। आर्य समाज की गरिमा को बनाने व बढ़ाने के लिए पुरोहित वर्ग ने अहर्निश अपने जीवन को दीपक की बाती बनकर तिल-तिल करके जलाया है। वह ढाई-तीन हजार के मासिक वेतन पर काम करके आर्य समाज के लिए लाखों रुपये जुटाता है। उस पर दायित्वों की गठरी तो लादी जाती है लेकिन उसके कुछ अधिकार भी हैं यह कोई जानने व समझने को तैयार नहीं है। पुरोहितों के खोये स्वाभिमान को लौटा कर ही आर्य समाज की गरिमा को अक्षुण्ण रखा जा सकेगा। सभाओं की उखाड़-पछाड़ और विघटन हर तरफ फैलता जा रहा है जिसने आर्य समाज को दयनीय स्थिति में ला खड़ा किया है। इस स्थिति के चलते पुरोहित वर्ग किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में अपने को खड़ा पाता है और वह

अपने दायित्व को निष्ठा, विवेक और ईमानदारी से निभाने में विफल रहता है अतः उसे सुरक्षित वातावरण मिलने पर ही वह समाज को नई ऊर्जा, गति, दिशा देने में समर्थ हो सकता है, लाखों परिवारों को आर्य समाज से पुनः जोड़ सकता है।

स्वामी अग्निवेश जी ने अपने सम्बोधन में यहाँ कहा कि पुरोहित वर्ग की हालत यदि बिगड़ी है तो इसका कारण वे खुद हैं क्योंकि संगठन में रहते हुए भी उन्होंने खुद को असंगठित रखा है। संगठित कर्मचारी और असंगठित श्रमिक की आपस में तुलना करें तो दोनों के मध्य का अन्तर स्पष्ट दिखने लगेगा। संगठित कर्मचारी अपने संगठन के बल पर अच्छा वेतन, महंगाई भत्ता, आवास सुविधा, बोनस, पेंशन सभी कुछ पाते हैं लेकिन असंगठित मजदूर इन सबसे वंचित रहते हैं। आर्य समाज का पुरोहित यदि अन्याय व शोषण का शिकार है तो इसीलिए है कि वह संगठित नहीं है। चारों वेदों में पहला वेद ऋग्वेद, ऋग्वेद के पहले मण्डल का पहला मन्त्र और इस मन्त्र का पहला शब्द है अग्नि, जिसका अर्थ सृष्टि के सन्दर्भ में परमात्मा और समाज के सन्दर्भ में पुरोहित है। इतना महत्वपूर्ण और गरिमामय पद यदि आज दयनीय स्थिति को प्राप्त है तो उसका कुछ दायित्व तो उसे लेना होगा, सारी जिम्मेदारी व्यवस्था के सिर तो नहीं मढ़ी जा सकती। अंग्रेजी की एक कहावत है कि आप घोड़े को पानी तक पहुँचा तो सकते हैं लेकिन उसे पानी नहीं पिला सकते। जब तक आप खुद संगठित नहीं होंगे, संघर्ष नहीं करेंगे तो मेरे एक बार मुक्ति दिला देने पर भी आपकी स्थिति उस बन्धुआ मजदूर जैसी होगी जो एक बार मुक्त करा दिये जाने पर फिर बन्धुआ बन जाता है। स्थायी रूप से बन्धन मुक्त तो आप तब होंगे जब खुद के संगठन व संघर्ष के बल पर मुक्त होने का प्रयास करेंगे। आर्य पुरोहित संगठित होकर कोई सार्थक योजना लेकर सार्वदेशिक सभा के पास यदि आते हैं तो उनका स्वाभिमान लौटाने की भरसक कोशिश की जायेगी। आर्य पुरोहित की छवि सुधरे, गरिमा बढ़े, प्रभाव अंकित हो तभी वह लाखों परिवारों को संस्था से जोड़ सकेगा और आर्य समाज को क्रान्तिकारी तेवर दे सकेगा। सार्वदेशिक सभा उसका स्वाभिमान मय बोनस के लौटाने को तैयार है बशर्ते वे इसे पाने की इच्छा शक्ति अपने भीतर पैदा करें। संगठन और संघर्ष ये दो ही मूल मन्त्र इच्छा शक्ति को पैदा करने वाले होते हैं।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में इस अवसर पर कहा कि पुरोहित वर्ग आर्य समाज का सर्वाधिक प्रबुद्ध, जाग्रत और क्रियाशील वर्ग है। इसे ही आर्य समाज की नींव का पत्थर अथवा आर्य समाज रूपी भवन के शिखर का कलश माना जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। आर्य समाज को जितने भी उच्च कोटि के आचार्य, धर्मगुरु, नेता मिले हैं वे अधिकांशतः इसी वर्ग से मिले हैं। उनकी विद्वता और जीवन से प्रेरणा लेकर ही कोई व्यक्ति आर्य समाज में दीक्षित होता है। वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रतिनिधि वाहक यदि कोई है तो वह पुरोहित ही है। भारत पाँच लाख गाँवों का देश है, जब तक हर गांव में आर्य पुरोहित नहीं होगा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। देश यदि साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, नारी उत्पीड़न से ग्रसित है, जीवन में ब्रह्मचर्य नहीं विलासिता को अपनाया जा रहा है, यम-नियम का पालन नहीं हो रहा है तो इस प्रदूषित वातावरण में ज्ञान, कर्म, भक्ति योग की धारा क्योंकर प्रवाहित होगी? अध्यात्म के फलने-फूलने का मार्ग ही पुरोहित प्रशस्त कर सकेगा जिसमें ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की अग्नि प्रज्ज्वलित रहेगी। पुरोहित के अपने अधिकार भी हैं लेकिन उसके लिए सर्वोपरि तो दायित्व का पालन करना है। दायित्व पहले नम्बर पर है और अधिकार दूसरे नम्बर पर। उसकी स्थिति सरहद पर खड़े सिपाही तुल्य है। आर्य समाज जब खुद दयनीय स्थिति का शिकार है तो पुरोहितों की सुध कौन कैसे लेगा? उन्हें पहले इस स्थिति को हिम्मत करके सुधारने में योगदान देना चाहिए। स्थिति सुधरने पर उनकी खुद की स्थिति भी सुधरेगी। पुरोहितों को उन आदर्शों को अपने सामने रखना होगा जिन्होंने अपने बलिदान से, अपने खून से दयानन्द की बगिया को सींचा है। जब बगिया के वृक्ष ही सूख जायेंगे तो फल कहां से मिलेंगे यह भी सोचना होगा। दूसरी ओर समाजों के अधिकारियों को भी यह समझना होगा कि कोरे आदर्शों से, उपदेशों से किसी का पेट नहीं भरता। आपके पेट की भूख मिटाने के लिए

जितनी रोटी चाहिए उतनी पुरोहित के पेट को भी मिलनी चाहिए। यदि बगिया के माली को ही अशक्त बना दोगे तो बगिया के वृक्षों को कैसे बचाया जा सकेगा?

इस पर भी विचार होना चाहिए। यदि पुरोहितों की स्थिति में सुधार नहीं होगा तो यह भी निश्चित है कि पुरोहिताई में लोगों की रुचि कम होगी और पुरोहितों के न होने से कौन संस्कार करायेगा, कौन परिवारों को आर्य समाज से जोड़े रखेगा, किससे आर्य समाज की गरिमा बढ़ेगी, कौन प्रवचन देगा? उनकी बेकद्री से गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने पुरोहितों का विश्वविद्यालय स्थापित करने की आवश्यकता बतलाई है। जब समाज में पुरोहितों की दयनीय आर्थिक व सामाजिक स्थिति को सुधारा नहीं जायेगा तो इस विश्वविद्यालय में प्रवेश कोई क्यों लेगा, इस पर भी विचार होना चाहिए।

अन्य वक्ताओं के भी सारगर्भित विचार यहां श्रोताओं को सुनने को मिले जिनमें वर्षों का अनुभव और भविष्य के प्रति एक रचनात्मक चिन्तन झलकता था। इसका पूरा विवरण 'वैदिक सार्वदेशिक' (5-11 जनवरी 2006) में उपलब्ध है।